- भारतीय संस्कृति के मूलभूत लक्षण, नैरन्तर्य एवं परिवर्तन, विविधता एवं एकता, सर्वधर्म समभाव, सार्वभौमिकता, भौतिकवाद एवं अध्यात्मवाद, सांस्कृतिक अस्मिता, धर्म, देश एवं नृवंश, सांस्कृतिक प्रभाव
- भारतीय संस्कृति एवं इतिहास, इतिहास के अध्ययन का महत्व, प्राचीन भारत, वैदिक सभ्यता, समाज एवं धर्म, भौतिक जीवन एवं आर्थिक स्थिति, प्रचलित धर्म एवं धार्मिक प्रगति
- प्राचीन भारत एवं एशिया, प्राचीन भारत एवं यूनान, यूनान पर भारत का प्रभाव, सम्राट अशोक, मौर्य काल में कला एवं स्थापत्य, मौर्योत्तर काल में सांस्कृतिक विकास, हर्षवर्धन का काल, गुप्त काल में सांस्कृतिक प्रगति, वास्तुकला, चित्रकला, पल्लव एवं चोल शासक एवं सांस्कृतिक प्रगति।
- वैदिक धर्म से पौराणिक धर्म की ओर संक्रमण, शिक्षा के महत्वपूर्ण केंद्र के रूप तक्षशिला एवं नालंदा, भारत में ईसाई धर्म,
- भारतीय कला, चित्रकला, प्राचीन युग, गुप्त काल, मध्ययुगीन एवं मुगलकालीन चित्रकला, आधुनिक काल में चित्रकला, अलंकृत कला, मिथिला चित्रकला, कलमकारी चित्रकला, उड़ीसा पटचित्र, फाड़ चित्र, भारतीय हस्तशिल्प।
- भारतीय ललित कलाएँ, संगीत, नृत्य तथा नाटक, भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रकार, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत, कर्नाटक संगीत, आधुनिक भारतीय संगीत, संगीतज्ञ, लोक संगीत, मुख्य संगीतज्ञ

➢ **ईकाई 2 :–**

- भारतीय भाषाएँ एवं संस्कृत साहित्य, वेद, श्रुति एवं स्मृति में भेद, उपनिषद् और भारतीय संस्कृति, रामायण एवं महाभारत, पुराण, पालि–प्राकृत–संस्कृत में बौद्ध साहित्य, गुप्त काल के संस्कृत लेखक,
- तेलगु कन्नड़ और मलयालम साहित्य, तमिल साहित्य,
- फारसी तथा उर्दु, मुगल काल में साहित्य की स्थिति, हिंदी साहित्य, आधुनिक काल में हिंदी भाषा का विकास, बांग्ला, असमी, और उड़िया साहित्य, पंजाबी एवं राजस्थानी साहित्य, गुजराती साहित्य, सिंधी साहित्य, मराठी साहित्य, कश्मीरी साहित्य, भारत में अंग्रेजी साहित्य के मुख्य लेखक
- भारतीय समाज की संरचना, वर्ण, आश्रम, पुरूषार्थ, संस्कार, परिवार, विवाह, नारी जाति, जनजाति समुदाय
- सामाजिक चुनौतियाँ, नारी सशक्तिकरण, लिंगभेद, व्यसन, साम्प्रदायिकता, गरीबी, बेरोजगारी,
- भारत के नृत्य, भरतनाट्यम्, ओडिसी, कुचीपुड़ी, मुख्य नर्तक।

- **परिणामः–**
  - भारतीय संस्कृति का महत्व प्रतिपादित होगा, जिससे वे अपनी संस्कृति के प्रति श्रद्धावान होंगे।
  - छात्रों को भारतीय संस्कृति तथा विरासत का सरल परिचय प्राप्त होगा, जिससे उनके ज्ञान में अभिवृद्धि होगी।
  - छात्र भारतीय संस्कृति के आध्यात्मिक स्वरूप से परिचित होंगे। इससे छात्रों के आत्म–विकास में सहायता मिलेगी।
  - छात्रों को भारतीय धर्म, दर्शन, इतिहास, कला, साहित्य, विज्ञान एवं अन्य भौतिक विद्याओं का ज्ञान प्राप्त होगा, जिससे वे अपनी संस्कृति एवं इतिहास के प्रति गौरव का अनुभव करेंगे।
  - छात्रों को अपनी सामाजिक संरचना का ज्ञान प्राप्त होगा।
  - भारतीय संस्कृति के प्रसार एवं महत्व से अवगत होने के बाद, छात्र उपनिवेशवादी दासता से मुक्त हो सकेंगे।
- **शिक्षा का माध्यम :–** हिन्दी/अंग्रेजी
- **केडिट्स :–** यह तीन केडिट का पाठ्यक्रम होगा।
- **कक्षाएँ :–** प्रतिसप्ताह तीन व्याख्यान होंगे। प्रत्येक व्याख्यान 50 मिनिट का होगा। शिक्षा का निदर्शन व्याख्यानों, एसाइनमेंट्स, एवं ट्यूटोरियल्स आदि के माध्यम से होगा।
- **परीक्षा :–** पाठ्यक्रम के प्रश्नपत्र में 50 अंक के वैकल्पिक प्रश्न, खाली स्थान, सही–गलत, जोड़ी, लघु उत्तरीय प्रश्न आदि हल करना होगा। परीक्षा का आयोजन पाठ्यक्रम के अंत में किया जाऐगा। परीक्षा का प्रश्नपत्र, भारतीय दर्शन विभाग के विभागाध्यक्ष के द्वारा प्रस्तावित आंतरिक/बाह्य विषय विशेषज्ञ के पैनल में से माननीय कुलपति, साँची बौद्ध–भारतीय ज्ञान वि.वि. के द्वारा नामित सदस्य द्वारा परीक्षा विभाग साँची वि.वि. द्वारा करवाया जाऐगा। सम्पूर्ण परीक्षा प्रकिया का आयोजन साँची वि.वि. का परीक्षा विभाग करेगा। परीक्षा योजना में परिवर्तन संभव है।
- **उत्तीर्ण अंक :–** परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करना अनिवार्य है।
- **पाठ्यक्रम की रूपरेखा :–** इस पाठ्यक्रम में छात्रों को "भारतीय सांस्कृतिक विरासत" का सरल परिचय कराने के लिए विषयवस्तु का चयन किया गया है। यह तीन ईकाईयों में विभाजित है।

ईकाई 1 :–

- संस्कृति की अवधारणा, संस्कृति और सभ्यता, संस्कृति और विरासत, संस्कृति की सामान्य विशेषताएँ, मानव जीवन में संस्कृति का महत्व,

- नाटक कला, भरत मुनि के नाट्य शास्त्र का परिचय, प्रमुख नाटक एवं नाटककार, आधुनिक थियेटर, सिनेमा,
- भारतीय स्थापत्य कला, हड़प्पा कालीन भवन–निर्माण कला, मौर्य एवं गुप्त कालीन स्थापत्य, मंदिर–निर्माण, मध्यकालीन स्थापत्य, दिल्ली सल्तनत, क्षेत्रीय शासनों में मंदिर–निर्माण, औपनिवेशिक स्थापत्य और आधुनिक काल, भारतीय नगर एवं कस्बे चेन्नई, कोलकाता, मुम्बई, दिल्ली आदि।

➢ **ईकाई 3 :–**

- प्राचीन भारत में धर्म, पूर्व–वैदिक और वैदिक धर्म, आस्तिक–नास्तिक एवं लोक धर्म।
- भारतीय षड् दर्शन, सांख्य–योग, न्याय–वैशेषिक, पूर्व–मीमांसा, वेदांत, नास्तिक दर्शन, चार्वाक दर्शन, जैन तथा बौद्ध दर्शन।
- मध्यकालीन भारत में धर्म, सूफी आंदोलन, इस्लाम का भारत में प्रवेश एवं विस्तार, सूफी आंदोलन का महत्व, भक्ति आंदोलन, कबीर, सूर, मीराबाई, चैतन्य महाप्रभु, तुलसीदास एवं रामचरितमानस का जनमानस पर प्रभाव।
- पुनर्जागरण काल, राजा राममोहन राय, ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, आर्य समाज एवं दयानंद सरस्वती, थियोसोफिकल सोसायटी एवं एनी बेसेन्ट, रामकृष्ण मिशन एवं स्वामी विवेकानंद, अलीगढ़ आंदोलन एवं सैयद अहमद खाँ
- भारत में शिक्षा, वैदिक युग, मौर्य काल, गुप्त काल, मध्य युग, आधुनिक काल, अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव, स्वतंत्रता के बाद के शिक्षा, प्रारंभिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, उच्च शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, दूरस्थ शिक्षा,
- भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, गणित, नक्षत्र विज्ञान, औषध विज्ञान, धातु विज्ञान, रसायन विज्ञान, कृषि, भूगोल।
- आधुनिक भारत के वैज्ञानिक एवं गणितज्ञ, रामानुजन, सी. वी. रमन, जे. सी. बोस, होमी जहांगीर भाभा, विकम साराभाई, ए. पी. जे. अब्दुल कलाम।
- भारतीय संस्कृति का विस्तार, शिक्षकों, राजदूतों प्रचारकों के माध्यम से प्रचार,

"भारतीय सांस्कृतिक विरासत"(Indian Cultural Heritage) विषय पर अर्धवार्षिक प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम

- **पाठ्यक्रम :–** "भारतीय परम्परा में उपनिषद्" विषय पर प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम
- **अवधि :–** छह माह
- **योग्यता :–** हॉयर सेकेण्डरी (बारहवीं) या समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण
- **प्रवेश :–** विषय विशेषज्ञ की समिति के समक्ष साक्षात्कार में उत्तीर्ण होने के उपरांत किया जाऐगा। विषय–विशेषज्ञों का नामांकन साँची बौद्ध–भारतीय ज्ञान अध्ययन वि.वि. के परीक्षा की नियमावलि के अनुसार किया जाऐगा। प्रवेश की सूचना प्रत्येक अकादमिक सत्र के आरंभ में जारी की जाऐगी।
- **उद्देश्य :–**
  - मानव जीवन में संस्कृति के महत्व को रेखांकित करना।
  - भारतीय सांस्कृतिक विरासत से छात्रों को परिचय कराना।
  - भारतीय संस्कृति की विशेषताओं का विवेचन करना।
  - भारतीय संस्कृति में अंतर्निहित एकता और विविधता के बिंदुओं का ज्ञान कराना।
  - भारतीय संस्कृति में अध्यात्मवाद के महत्व को प्रदर्शित करना।
  - भारतीय इतिहास का सिंधु–वैदिक सभ्यता से आधुनिक युग तक संक्षिप्त परिचय कराना।
  - भाषाओं के अंतर्गत वेद, उपनिषद्, गीता आदि संस्कृत साहित्य का परिचय कराना।
  - भारतीय धर्म, दर्शन एवं सम्प्रदायों का परिचय कराना।
  - भक्ति आंदोलन एवं पुनर्जागरण का संक्षिप्त परिचय कराना।
  - भारतीय कला एवं चित्रकला का संक्षिप्त उल्लेख करना।
  - ललित कलाओं, संगीत, नृत्य तथा नाटक आदि का विवेचन करना।
  - भारतीय स्थापत्य, वास्तुकला एवं मंदिर निर्माण की कला का परिचय कराना।
  - प्राचीन, मध्ययुगीन तथा आधुनिक भारत में विज्ञान, प्रौद्योगिकी तथा गणित की स्थिति तथा प्रगति का उल्लेख करना।
  - भारतीय सामजिक संरचना, पुरूषार्थ, आश्रम, संस्कार, विवाह एवं परिवार आदि का वर्णन करना।
  - प्राचीन एवं आधुनिक काल में भारतीय संस्कृति का प्रचार।